

FACING THE CLIMATE EMERGENCY

संदर्भ

- अमेरिका के नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की तरफ से हाल ही में जारी किए गए एक प्रतिवेदन से पता चलता है कि पिछली आधी शताब्दी के दौरान ग्लोबल वार्मिंग के कारण विभिन्न राष्ट्रों की आय में बदलाव देखने को मिला है। जहाँ एक ओर 1961 से 2010 के बीच भारत की GDP में 31% की कमी दर्ज की गई वहीं इस अवधि में नार्वे ने प्रति व्यक्ति आय के आधार पर 34% का लाभ प्राप्त किया है।

पृष्ठभूमि -

- हाल ही में जैव-विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतर सरकारी विज्ञान-नीति प्लेटफार्म ने बताया है कि दुनियाभर में प्रजातियों की विविधता में 1/5 भाग की कमी हुई है तथा लगभग एक लाख प्रजातियों पर कुछ दशकों में विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है, वही 85% आर्द्रभूमि समाप्त होने को है।
- इन आश्चर्यजनक वैज्ञानिक निष्कर्षों में से कोई भी खबर सुर्खिया नहीं बनी। प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद ने जलवायु परिवर्तन तथा भारत में जैव-विविधता के प्रभावों के कारण आर्थिक नुकसान पर चर्चा करने के लिए एक भी आपातकालीन बैठक आयोजित नहीं किया। भारत में आम चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र में शायद ही जलवायु और पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। इसके बजाय 'व्यापार हमेशा के लिए' और 'जीवन हमेशा के लिए' है जैसे राजनीति के वक्तव्यों को ही प्रचारित किया जाता रहा है।
- इसके अतिरिक्त हमारे पास कुलीन वर्ग से संबंधित कई उदाहरण हैं जो स्थिति का लाभ उठाकर अपने नियंत्रण को मजबूत करते हैं। सरकारें अक्सर सक्रिय रूप से या चतुराई से जीवाश्म ईंधन कंपनियों, कृषि-औद्योगिक अभिजात वर्ग, वित्तीय कुलीन वर्ग और अन्य बड़े व्यवसायिक घरानों के साथ होती हैं जो जलवायु परिवर्तन की अनदेखी कर रही हैं; जिससे आपदाओं में वृद्धि हुई है।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने अनुमान लगाया है कि जीवाश्म ईंधन सब्सिडी 2015 में \$ 4.7 ट्रिलियन थी। 2017 में इसका \$ 5.2 ट्रिलियन होने का अनुमान है। ऐसा मानना है कि कुशल जीवाश्म ईंधन मूल्य निर्धारण, वैश्विक कार्बन उत्सर्जन को 28% तक नीचे ला सकता है।
- आर्कटिक क्षेत्र तेजी से पिघल रहा है और आर्कटिक देशों के मध्य हाल ही में हुई चर्चाओं से पता चलता है कि इस क्षेत्र में ग्लेशियर पिघलना शिपिंग व्यवसाय को भी लाने हेतु जिम्मेदार हैं। महाशक्तियाँ इस क्षेत्र में तेल, गैस, यूरेनियम और बहुमूल्य धातु से धन उगाही के लिए किसी भी रूप में आगे आने का प्रयास कर ही रही हैं।
- इसका एक अन्य उदाहरण मॉजांबिक में भी देखा जा सकता है, जहाँ चक्रवात इडाई और केनेथ के कारण व्यापक तबाही हुई है। इस तबाही के पश्चात बड़ी ऊर्जा और तेल कंपनियाँ वहाँ उपस्थिति प्राकृतिक गैस के भण्डार के दोहन के लिए उत्सुक बैठी थी। इन विदेशी कंपनियों को स्थानीय कुलीन वर्ग का भी साथ मिला। इस प्रकार का भ्रष्टाचार नया नहीं है बल्कि इसके अन्य रूप दूसरे देशों में भी देखे जा सकते हैं। सरकार, कार्पोरेट घराने, और संबंधित देश के कुलीन वर्ग ऐसे कार्यों को मिलकर संपादित करते हैं। पर्यावरणीय कानूनों को आसानी से तोड़ा जा सकता है तथा जुर्माने जो लगाए जाते हैं उसे भी रद्द किया जा सकता है।
- ऐसी परिस्थितियों का शिकार सबसे ज्यादा गरीब एवं सत्ता तक पहुँच नहीं रखने वाले लोग होते हैं। इसका सबसे नवीन उदाहरण भारतीय वन अधिनियम 2019 है जो वन विभाग के राजनीतिक शक्ति एवं पुलिस शक्ति को बढ़ाता है तथा लाखों वनवासियों के अधिकारों में कटौती करता है।

वास्तविकता की पहचान

- नीतियाँ और प्रतिबद्धताएँ स्पष्ट करती हैं कि अधिकांश सरकारें और व्यवसायी वर्ग जलवायु और पारिस्थितिकी संकटों से निपटने में रूचि नहीं रखते हैं। आपातकालीन समय में इन मुद्दों पर जिस प्रकार से ध्यान देना चाहिए निश्चित रूप से उस प्रकार से ध्यान नहीं दिया जा रहा है।
- वर्तमान में जो दिखाई दे रहा है, वह 'ग्रहीय आपातकाल' हेतु वृहद पैमाने पर चलाया जा रहा आंदोलन है।
- जिसके केन्द्र बिन्दु में जलवायु तथा पारिस्थितिकी है। इस प्रकार का आंदोलन यूरोप के अनेक भागों के साथ-साथ एशिया में भी प्रारम्भ हो गया है। यह एक सविनय अवज्ञा जैसा आंदोलन है जिसमें छात्रों के साथ-साथ वयस्कों की भी भागीदारी है, इसे अधिक समय तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। सरकारों को इस मुद्दे पर संज्ञान लेना ही पड़ेगा।
- वायुमंडल में वर्तमान में कार्बन डाई-आक्साईड की 415PPM मात्रा संकेन्द्रित है जो पूर्व-औद्योगिक काल में 280 PPM थी। किंतु तेल कंपनियों एवं राजनीतिज्ञों द्वारा इस संदर्भ में भ्रामक सुचनाएँ प्रदर्शित की जाती रही हैं। इसे इस प्रकार से भी देखा जा सकता है कि वर्षों तक तंबाकू कंपनियों द्वारा सिगरेट पीने को सुरक्षित बताया जा रहा था।
- मुट्ठी भर वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्निंग की सच्चाई को अस्पष्ट तरीके से प्रस्तुत किया जिससे इसका व्यवसायिक लाभ उठाया जा सके। प्राकृतिक तेल कंपनियों द्वारा राजनेताओं को वित्त पोषित किया जा रहा है जिससे नीतियों को अपने पक्ष में मोड़ा जा सके।

वृहद परिवर्तन की आवश्यकता

- पृथ्वी को कार्बन शून्य की ओर ले जाने वाले सुधारों की आवश्यकता है।
- हम ऐसी अवस्था में हैं जहाँ हमें अपनी जीवनशैली और उपभोग के तौर-तरीके में बड़े बदलाव की जरूरत है। ब्रिटिश संसद विश्व की पहली ऐसी संसद बनी जिसने इस संकट को पहचाना है एवं जलवायु आपातकाल की घोषणा की है। अभी यह देखा जाना बाकी है कि इस आपातकाल से निपटने के लिए क्या उचित कदम उठाए जायेंगे।
- पिछले तीन दशकों से जलवायु परिवर्तन से संबंधित भ्रामक नीतियों पर बहस करते आ रहे लोगों की तुलना में जब एक 16 वर्षीय किशोर कही अधिक स्पष्टता के साथ अपनी बातों को रखता है तो ऐसा लगता है कि जलवायु संकट की राजनीतिक को एक आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न - भारत में पर्यावरणीय संदर्भ आदि काल से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्रकृति को माँ के संबोधन द्वारा यह स्पष्ट दृष्टिगत है। वर्तमान में प्रासंगिक पर्यावरणीय समस्याओं के लिए हमारे परंपरागत दृष्टिकोण तथा आधुनिक प्रयासों की समीक्षा कीजिए।